

स्वस्तिवाद पुं. (तत्.) किसी को 'स्वस्ति' (तुम्हारा कल्याण हो) यह कहकर दिया जाने वाला आशीर्वाद का एक रूप।

स्वस्तेन पुं. (तद्.) एक प्रकार का मांगलिक धार्मिक, कृत्य, 'स्वस्त्ययन'।

स्वस्थ वि. (तत्.) 1. जो स्वयं अपने आप में स्थित हो, आत्मस्थ 2. जो शारीरिक दृष्टि से पूर्णतया तंदुरुस्त हो 3. जो किसी प्रकार से रोगजनक न हो 4. जो रचना सामाजिक दृष्टि से मानसिक विकारजन्य न हो जैसे- स्वस्थ साहित्य।

स्वस्थचित्त वि. (तत्.) 1. जिसका चित्त स्वस्थ हो, जो मानसिक दृष्टि से स्वस्थ हो 2. प्रसन्नचित्त, संतुष्ट।

स्वस्थता स्त्री. (तत्.) 1. स्वस्थ होने की अवस्था या भाव, तंदुरुस्ती, नीरोगता।

स्वस्थमृदा स्त्री. (तत्.) वह मिट्टी जिसमें फसलें ठीक प्रकार से उग सकें क्योंकि उसमें सभी प्रकार के भौतिक या रासायनिक गुण सामान्य रूप से पाए जाते हैं।

स्वस्थाने क्रि.वि. (तत्.) अपने ही स्थान में जैसे- स्वस्थाने देवालय।

स्वस्त्रीय पुं. (तत्.) बहन का लड़का, भानजा।

स्वस्वार्थाय क्रि.वि. (तत्.) अपने-अपने हितसाधन के लिए, अपने-अपने मतलब के लिए।

स्वहस्त पुं. (तत्.) 1. अपना हाथ 2. अपने ही हाथ का लेख।

स्वहस्ताक्षर पुं. (तत्.) 1. अपने हस्ताक्षर 2. अपने दस्तखत।

स्वहस्ताक्षरित वि. (तत्.) जिस पर अपने हस्ताक्षर किए गए हो।

स्वहाना अ.क्रि. (देश.) सुहाना, अच्छा लगना वि. सुहाना मौसम।

स्वहित पुं. (तत्.) अपना हित, अपना कल्याण।

स्वांगिक पुं. (तत्.) ढोल, तबला, मृदंग आदि ऐसे बाजे जिन्हें बजाने वाला अपनी गोद में रखकर बजाता है।

स्वांग पुं. (तत्.) 1. नाटक आदि में किसी दूसरे की वेशभूषा को इस प्रकार धारण करना जिससे देखने में वह वही दूसरा व्यक्ति प्रतीत हो 2. दूसरे का रूप धरने की क्रिया या भाव 3. दूसरों को भ्रम में डालने के लिए या अपना कोई काम सिद्ध करने के लिए धारण किया जाने वाला झूठा रूप।

स्वांगना स.क्रि. (तत्.) स्वांग बनाना, बनावटी वेश या रूप धारण करना।

स्वांगी पुं. (तत्.) विविध प्रकार के स्वांग बनाकर जीविकोपार्जन करने वाला, नक्काल, बहुरूपिया वि. अनेक तरह के रूप धारण करने वाला।

स्वांगीकरण पुं. (तत्.) 1. किसी एक वस्तु या अन्य दूसरी वस्तुओं को पूर्णरूपेण अपने आप में इस प्रकार मिला लेना जिससे कि वे उसके अंग के रूप में हो जाएँ 2. जीव. भोजन के बाद जीवों में अवशोषित पोषक पदार्थों का जीवनरस में होने वाला परिवर्तन। protoplasm

स्वांतःसुख पुं. (तत्.) अपना आत्मिक सुख।

स्वांतःसुखाय क्रि.वि. (तत्.) 1. केवल आत्मिक सुख व शांति के लिए 2. अपने मानसिक आनंद के लिए, किसी अन्य के या सांसारिक लाभ के लिए नहीं जैसे- 'स्वांतःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा' अर्थात् तुलसी ने रामचरितमानस की रचना अपने आत्मिक सुख व शांति के लिए की थी।

स्वांत पुं. (तत्.) 1. अपना अंत, मृत्यु 2. अंतःकरण 3. अपना प्रदेश या राज्य 4. गुफा।

स्वांतज पुं. (तत्.) 1. अपने अंतःकरण या मन से उत्पन्न, कामदेव 2. प्रेम।

स्वांसा पुं. (देश.) ताँबा मिला हुआ खोटा सोना, या ताँबे के खोट वाला सोना।

स्वाँस पुं. (तद्.) जीव के मुख या नाक से ग्रहण व विसर्जन की जाने वाली वायु, साँस।

स्वाकृति वि. (तत्.) 1. सुंदर स्वरूप वाला, रूपवान 2. अच्छी आकृति वाला।

स्वाक्षर पुं. (तत्.) 1. अपने ही हाथों से लिखा गया अक्षर, अपना हस्तलेख 2. किसी के अपने हाथ से लिखा गया कोई वाक्य शब्द या छोटा